© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 12 | October – December 2017

उपनिवेशवाद का भारतीय शिक्षा एवं सस्कृति पर प्रभाव : एक विवेचना

श्रीमती अनुबाला

परिचय

कोलोनियलिज्म' शब्द लैटिन भाषा के 'कोलोनिया' से बना है, जिसका अर्थ होता है- एक ऐसी संपत्ति जिसे योजनाबद्ध ढंग से विदेशियो द्वारा कायम किया गया हो। इतिहास में 15वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक उपनिवेशवाद का काल रहा, जिसमें यूरोपियो ने विश्व के विभिन्न भागो में अपना उपनिवेश बनाया। शोषण करने एवं प्रभुत्व स्थापित करने का एक ऐसा तरीका, जिसमे किसी एक भौगोलिक क्षेत्र के व्यक्तियों द्वारा अन्य किसी भौगोलिक क्षेत्र में इस उद्देश्य के साथ उपनिवेश (कालोनी) स्थापित किया जाता है कि यह एक अच्छा काम है, उपनिवेशवाद कहलाता है। इसमें किसी शक्ति समूहों द्वारा किसी अन्य क्षेत्र और दूसरे व्यक्ति समूहों के व्यवहार पर नियंत्रण स्थापित किया जाता है। उपनिवेशवाद के अन्तर्गत उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था व सामाजिक प्रणाली का निर्धारण एवं नियमन उपनिवेशवादी साम्राज्यवादी देश की अर्थव्यवस्था व पूँजीवादी वर्ग की आवश्यकताओं को दृष्टि मे रखकर किया जाता था। उपनिवेशवाद की प्रक्रिया के तहत वैश्विक पूँजी बाजार एवं साम्राज्यवादी प्रमुख के अन्तर्गत उपनिवेशों के कई निष्क्रिय या अमौद्रीकृत क्षेत्र भी सक्रिय होकर केन्द्रीय वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ जाते हैं, परन्तु अधिकांशतः उपनिवेश इस प्रक्रिया में कच्चे मालों का उत्पादनकर्ता बन जाते है, जबकि उच्चतर प्राद्योगिकी एवं उच्चतर उत्पादक क्षमता के बलबूते साम्राज्यवादी देश विनिर्मित मालों का उत्पादन करते थे। विनिर्मित मालों के उत्पादन के लिए कच्चे मालों की पूर्ति के लिए साम्राज्यवादी देश उपनिवेशों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपनी सत्ता लाद देत थे एवं अपने हितों की पूर्ति के उद्देश्य से उपनिवेशों में सीमित स्तर पर अवसंरचनात्मक या आर्थिक विकास करने पर भी बल देते थे। इसी प्रक्रिया के तहत विभिन्न देशों एवं विभिन्न अवधियो में उपनिवेशवाद का स्वरूप भी बदलता रहता है। अतः राजनीतिक आधिपत्य की स्थापना उपनिवेशों का मनमाना शोषण करने का प्रभावी माध्यम रहा है।

उपनिवेशवाद

प्रसिद्ध इतिहासकार 'विपिनचन्द्र' ने उपनिवेशवाद को एक सामाजिक संगठन के रूप में व्याख्यायित किया है, जिसमें सामंतवाद, दास-प्रथा, बन्धुआ मजदूरी, लघु स्तर पर उत्पादन व्यापार, सूदखोरी के कार्य एवं औद्योगिक और वित्तीय पूँजीवादी एक साथ उत्पादन के ये विभिन्न तरीके मौजुद रहते हैं एवं इनके माध्यम से सामाजिक अधिशेष का उपभोग उपनिवेशवादी ताकत के हितों की पूर्ति के लिए किया जाता है। 1757 ई0 में प्लासी की लड़ाई में सिराज-उद्-दौला की हार को औपनिवेशिक शासन का आरंभ माना जाता है। 1765 में बक्सर की लड़ाई के बाद बंगाल की दीवानी ब्रिटिश हाथों में चली गई। ब्रिटिश संसद के घोषणा-पत्र के तहत ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत समेत पूर्व के साथ व्यापार का एकाधिकार दे दिया गया। इन युद्धों के बाद उन्होंने विजित राज्य क्षेत्रों से भू-राजस्व एकत्रित करने की अनन्य नियंत्रण शक्ति भी अर्जित कर ली। ब्रिटिशों ने अर्थव्यवस्था को अपने सीधे नियंत्रण में लाने के लिए अपनी राजनीतिक नियंत्रण-शक्ति का प्रयोग किया। शीघ्र ही भारतीय अर्थव्यवस्था की दिशा ब्रिटिश अर्थव्यवस्था के हितों की पूर्ति हेतु बदल